11 जल ही जीवन है

– श्री प्रकाश

उन्मुखीकरण

प्रश्न

1. यह विज्ञापन किसके बारे में है?
2. यह विज्ञापन किस समाचार-पत्र का है?
3. इससे क्या संदेश मिलता है?

उद्देश्य

जल हमारे जीवन का एक प्रमुख आधार है। पानी का सही उपयोग करके आने वाली पीढ़ियों के लिए बचा कर रखना चाहिए। इस विषय को लेकर पानी का महत्व व उपयोग और पानी संबंधी जानकारी दी जा रही है।

विधा विशेष

'जल ही जीवन है' यह एक कहानी पाठ है। इस कहानी में वे सभी तत्व हैं जो एक आदर्श कहानी में होने चाहिए। यहाँ भविष्य में घटनेवाली काल्पनिक घटनाओं को आधार बनाकर जल के महत्व को और अधिक बढ़ा दिया है। यह सच है कि कहानी सदा बच्चों की प्यारी विधा रही है। इसी कारण जल का महत्व इस विधा में प्रस्तुत किया जा रहा है।

लेखक परिचय

श्री प्रकाश हिंदी के जाने-माने लेखक हैं। इन्होंने विज्ञान विषय संबंधी ढेर सारे निबंध लिखे हैं। इनके निबंध विचारोत्तेजक हैं। प्रस्तुत रचना ''संचार माध्यमों के लिए विज्ञान'' नामक पुस्तक से ली गयी है।

छात्रों के लिए सूचनाएँ

1. विषय प्रवेश ध्यान से पढ़िए, पाठ्य विषय समझिए।
2. पाठ ध्यान से पढ़िए, जिस शब्द का अर्थ समझ में नहीं आता उसके नीचे रेखा खींचिए।
3. रेखांकित शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।
4. समझ में न आने वाले अंश हो तो छात्र समूहों में या अध्यापक से चर्चा कीजिए।

विषय प्रवेश : *दुनिया की सभी भाषाओं में जल के अलग-अलग नाम हैं। किंतु सबकी प्यास एक है। जल के बिना जीवन की कल्पना करना असंभव है। जल में जीवन बसता है और जीवन में जल का महत्व। प्रस्तुत पाठ में इसी विषय को उजागर करने का प्रयास किया गया है।*

इक्कीसवीं सदी का अब अंत होने वाला था और बाईसवीं सदी की शुरुआत। पृथ्वी पर मानव ने काफ़ी प्रगति कर ली थी। जनसंख्या पर नियंत्रण कर लिया था। पर्यावरण की समस्या को लगभग हल कर लिया गया था। लोग सुख-चैन से रह रहे थे। अचानक एक दिन समाचार पत्र में एक ख़बर प्रकाशित हुई, जिसे पढ़कर लोग आश्चर्यचकित हो गए। इस ख़बर के अनुसार एक सर्वेक्षण में बताया गया कि पृथ्वी पर निरंतर पानी की कमी होती जा रही है।

वैज्ञानिक, भूवैज्ञानिक थे। वे अपने दोस्तों के साथ बगीचे में बैठे पानी की इस समस्या पर चर्चा कर रहे थे। कुछ देर बाद शाम ढल गयी और सभी लोग अपने - अपने घर चले गये। प्रो. दीपेश वहीं लान पर बैठे आकाश की ओर देखकर कुछ सोच रहे थे कि अचानक उनकी नज़र एक तारे पर पड़ी जो नाचता हुआ पृथ्वी की ओर आ रहा था। पृथ्वी पर उतरते - उतरते वह पुनः आकाश की ओर मुड़ गया।

ओह! यह तो कोई यान है। पर, पृथ्वी पर ऐसे यान का अभी आविष्कार ही नहीं हुआ है, फिर यह यान कहाँ से आया? इस प्रश्न का उत्तर कुछ समझ में आने पर प्रो. दीपेश के होश उड़ गए और दौड़े-दौड़े अपने कमरे में चले गये। उन्होंने अपने मित्र प्रो. विकास को फोन किया और अपने घर बुलाकर सारी बात बतायी।

प्रो. दीपेश की बातें सुनकर प्रो. विकास को ज़्यादा आश्चर्य नहीं हुआ, क्योंकि वे ब्रह्मांड के अन्य ग्रहों पर जीवन की खोज में लगे हुए थे। उन्हें विश्वास था कि इस अनंत ब्रह्मांड में हम अकेले नहीं हैं। किसी न किसी ग्रह पर जीवन ज़रूर है।

प्रो. विकास अगली शाम को प्रो. दीपेश के साथ उनके ही बाग़ में बैठकर प्रतीक्षा कर रहे थे कि शायद वह अंतरिक्ष यान दुबारा इस रास्ते से गुज़रें। उनका इंतजार करना व्यर्थ नहीं गया। दुबारा वह अंतरिक्ष यान उसी रास्ते से गुज़रा, लेकिन वह इस बार वापस अंतरिक्ष में नहीं गया। वह बाग़ में ही उतरा। प्रो. दीपेश और प्रो. विकास आश्चर्यचकित हो उस यान को देख रहे थे। दोनों सोचने लगे कि यह यान यहाँ क्यों उतरा? इस प्रकार पृथ्वी का चक्कर लगाने का क्या मतलब हो सकता है? क्या यह कोई जासूसी यान है, जो पृथ्वी पर जासूसी करने आया है, या पृथ्वी पर किसी हमले की तैयारी करने के लिए? क्या हम जैसे बुद्धिजीवियों का वे अपहरण करना चाहते हैं? ऐसे कई प्रश्न उनके दिमाग़ में बिजली की भाँति दौड़ रहे थे। तभी उस अंतरिक्ष यान का दरवाज़ा खुला और एक मानवाकृति बाहर आई जो हू-बू-हू पृथ्वी वासियों जैसी थी। लेकिन आकार में बड़ी थी।

प्रश्न
1. सर्वेक्षण में क्या बताया गया?
2. प्रो. दीपेश के होश क्यों उड़ गये?
3. जासूसी यान से क्या तात्पर्य है?

प्रो. दीपेश और प्रो. विकास उस अंतरिक्षयात्री को देखकर आश्चर्यचकित हो गए कि अंतरिक्ष में अन्य ग्रहों पर भी हम पृथ्वीवासियों की ही भाँति लोग हैं। दोनों ने इसकी कल्पना तो दूसरे ही रुप में की थी। तभी एक आवाज़ गूँजी....

"हैलो। हम लोग इस ग्रह से एक प्रकाशवर्ष दूर के एक ग्रह के वासी हैं। हम लोग यहाँ एक मिशन के तहत आए हैं।" आवाज़ को सुन प्रो. दीपेश और प्रो. विकास के आश्चर्य की सीमा नहीं रही, क्योंकि उसकी आवाज़ भी हमारी ही तरह थी।

"मिशन। कैसा मिशन? क्या तुम्हारे और साथी भी हैं?" दोनों ने एक साथ उस अंतरिक्षयात्री से पूछा।

"हाँ, मेरे कई साथी इस संपूर्ण नीले ग्रह पर फैले थे। अब हमारा मिशन पूरा हो चुका है इसलिए अब हम अपने ग्रह पर वापस जा रहे हैं?"

"लेकिन तुम्हारा मिशन क्या है? कहीं तुम पृथ्वी पर तबाही तो नहीं मचाना चाहते हो? कहीं तुम इस पर अधिकार करना तो नहीं चाहते? प्रो. विकास ने पूछा।

"नहीं। हम यहाँ तबाही मचाने या अधिकार करने नहीं आए हैं। हम तो आपकी उस विशाल जलराशि की कुछ मात्रा अपने ग्रह पर ले जाने के लिए आए थे।

प्रो. दीपेश और प्रो. विकास को यह समझते देर नहीं लगी कि पृथ्वी का जलस्तर एकाएक क्यों कम हो गया है।

"लेकिन क्यों ले जा रहे हो यहाँ से यह जल? तुम्हें मालूम है कि हम बिना जल के जीवित नहीं रह सकते?"

"मालूम है। इसलिए हम इसकी सिर्फ़ थोड़ी - सी मात्रा अपने ग्रह पर ले जा रहे हैं। हमारे ग्रह के जल में एक विशेष प्रकार के विषाणुओं के मिल जाने के कारण वह ज़हरीला हो गया है। उसके उपयोग से हमारे ग्रह पर महामारी फैल गई है, जिससे वहाँ के लोग मरने लगे हैं। हमने तो उन विषाणुओं को नष्ट कर दिया है, लेकिन जल में घुले ज़हर को अभी तक पहचान नहीं पाए हैं। जल को विषहीन बनाने में समय लगेगा। पानी के अभाव में हमारे लोग मर रहे थे। अपने अस्तित्व के लिए हमने निर्णय लिया कि हम जल्द-से-जल्द अन्य किसी ग्रह की खोज कर वहाँ का पानी अपने ग्रह पर ले जाएँगे। अपने ग्रह के लोगों का जीवन बचाएँगे। हमारी नज़र आपके नीले ग्रह पर पड़ी, जो हमसे अधिक नज़दीक था। हम यहाँ उतर गए। हम लोगों ने यहाँ पर विशाल जलभंडारों को देखा और निर्णय किया कि जब तक हमारे ग्रह पर पानी शुद्ध नहीं हो जाता, तब तक हम लोग यहीं से जल को अपने ग्रह पर ले जाएँगे। हम लोग लगभग एक सप्ताह से जल को विशेष यान की सहायता से ले जा रहे हैं। हम लोग अपना मिशन चुपचाप पूरा करना चाहते थे।"

वह बोला, "मैं वहाँ का राजा होने के नाते आपसे माफ़ी माँगता हूँ। हम लोगों ने बिना आपकी अनुमति के आपकी अमूल्य जलनिधि को चुराया और अपने ग्रह पर ले गये।"

अंतरिक्ष यात्री अपनी बातें समाप्त कर अपने यान में बैठकर अंतरिक्ष की ओर उड़ चले।

प्रो. दीपेश और प्रो. विकास टकटकी लगाए इस अंतरिक्ष यान के बारे में सोच रहे थे। कुछ क्षणों में वह अंतरिक्ष यान उनकी आँखों से ओझल हो गया।

अचानक प्रो. विकास की नज़र एक वस्तु पर पड़ी। उस पर लिखा था, 'हमें आशा है कि आप लोगों ने हम अंतरिक्ष जलचोरों को माफ़ कर दिया होगा। आपसे प्रार्थना है कि आप अपने जलाशयों को साफ़ और सुरक्षित रखें ताकि आपको भी हमारी तरह जलचोर न बनना पड़े।"

आप ही का अंतरिक्ष जलचोर मित्र ।

('संचार माध्यमों के लिए विज्ञान')

4. मानवाकृति अंतरिक्षयात्री कहाँ से आये थे?
5. वे पृथ्वी पर क्यों आये थे?
6. उनकी प्रार्थना क्या थी?

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

(अ) प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. हमारे जीवन में जल का क्या महत्व है?
2. धरती पर हर हिस्से में जल है, किंतु स्वच्छ जल की मात्रा बहुत कम है। ऐसी स्थिति में जल का सदुपयोग कैसे करेंगे?

(आ) पाठ पढ़िए। अभ्यास कार्य कीजिए।

1. हमारे घर पहुँचने वाले जल का उपयोग हम किसके लिए कर रहे हैं?
2. जल की समस्या भविष्य में क्या आपदाएँ ला सकती हैं?
3. जल की समस्या का समाधान क्या है?

(इ) निम्नलिखित पंक्तियों की व्याख्या कीजिए।

1. इस प्रकार पृथ्वी का चक्कर लगाने का क्या मतलब हो सकता है?
2. हम लोग यहाँ एक मिशन के तहत आए हैं।
3. आप अपने जलाशयों को साफ़ और सुरक्षित रखें ताकि आपको भी हमारी तरह जलचोर न बनना पड़ें।

(ई) विज्ञापन पढ़कर कोई चार प्रश्न बनाइए।

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय
भारत सरकार
राष्ट्रीय किशोर स्वास्थ्य कार्यक्रम

भारत सरकार का राष्ट्रीय किशोर कार्यक्रम वर्तमान चिकित्सालय आधारित संभाल से समुदाय आधारित स्वास्थ्य वर्धन एवं रोकथाम की ओर एक नई शुरुआत का संकेत है। जिसका उद्देश्य किशोर जहाँ हैं, वहाँ तक उनके पास पहुँचना यानी कि स्कूलों और समुदायों में। यह कार्यक्रम छह प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में क्रियाशीलता पर लक्षित है : प्रजनन एवं यौन स्वास्थ्य, न्यूट्रीशन, मानसिक स्वास्थ्य, घरेलू एवं लिंग आधारित हिंसा सहित चोटें एवं हिंसा, नशीले पदार्थों का सेवन एवं असंक्रमणशील बीमारियाँ।

इस कार्यक्रम के अंतर्गत लगभग चौबीस करोड़ किशोरों तक पहुँच की जाएगी।

RKSK

वर्तमान में किशोर स्वास्थ्य पर निवेश करके हम भविष्य में श्रम शक्ति, अभिभावकों एवं नेताओं पर निवेश कर रहे होंगे और इस प्रकार पीढ़ी दर पीढ़ी चलने वाली घटिया स्वास्थ्य के कुचक्र को तोड़ देंगे।

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

(अ) इन प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में लिखिए।

1. 'जल ही जीवन है।' शीर्षक से आपका क्या अभिप्राय है?
2. जल स्रोतों के रखरखाव के बारे में आप क्या सुझाव देना चाहेंगे?

(आ) आज दुनिया के सभी देशों में जल की समस्या बनी हुई है। इसके समाधान में हम सब की क्या ज़िम्मेदारी है?

(इ) "जल ही जीवन है।" इस विषय पर एक पोस्टर बनाइए।

(ई) आपके गाँव में जल संरक्षण कैसे किया जा रहा है? इसके बारे में बताते हुए कुछ सुझाव दीजिए।

भाषा की बात

(अ) सूचना पढ़िए। उसके अनुसार कीजिए।

1. 'जल' शब्द से कई शब्द बने हैं। जैसे : जलचर। इसी तरह के तीन उदाहरण दीजिए।
2. पाठ में आये विदेशज शब्द चुनकर लिखिए। जैसे : मिशन।

(आ) नीचे दिये गये वाक्य पढ़िए। कोष्ठक में दी गयी सूचना के अनुसार वाक्य बदलिए।

1. यह तो कोई यान है। (भूत काल में बदलिए।)
2. मेरे कई साथी इस संपूर्ण नीले ग्रह पर फैले थे। (भविष्य काल में बदलिए।)
3. पानी के अभाव में हमारे लोग मर रहे थे। (वर्तमान काल में बदलिए।)
4. हम लोग अपना मिशन चुपचाप पूरा करना चाहते थे। (भविष्य काल में बदलिए।)

(इ) नीचे दिया गया उदाहरण पढ़िए। उसके अनुसार एक वाक्य बनाइए।

उदाहरण : पृथ्वी पर मानव ने काफ़ी प्रगति कर ली थी।
पृथ्वी पर किसने काफ़ी प्रगति कर ली थी?

(ई) अर्थ के आधार पर वाक्य पहचानिए।

1. ओह! यह तो कोई यान है।
2. यह यान कहाँ से आया?
3. दोनों ने एक साथ उस अंतरिक्ष यात्री से पूछा।
4. यहाँ का जल शुद्ध होगा।
5. हमारे यहाँ जल होता तो हम पृथ्वी पर न आते।
6. हमें शुद्ध जल चाहिए।
7. आप भी कभी हमारे यहाँ आइए।
8. नदी-नालों में कचरा बहाना मना है।

परियोजना कार्य

'जल संरक्षण' पर पी.पी.टी. बनाकर कक्षा में प्रस्तुत कीजिए।

पठन हेतु

क्या आपको पता है?

आधुनिक समाज में भाषा का विविध रूपों में प्रयोग होता है। उन्हीं में से एक प्रयोग आज तकनीकी की दुनिया में अत्यधिक महत्वपूर्ण है, जिसे हम पी.पी.टी. के नाम से जानते हैं। कंप्यूटर के द्वारा स्लाइड बनाकर इसे प्रस्तुत किया जाता है। विश्व का एक प्रमुख पॉवर पाइंट प्रेजेंटेशन पठन हेतु यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है।

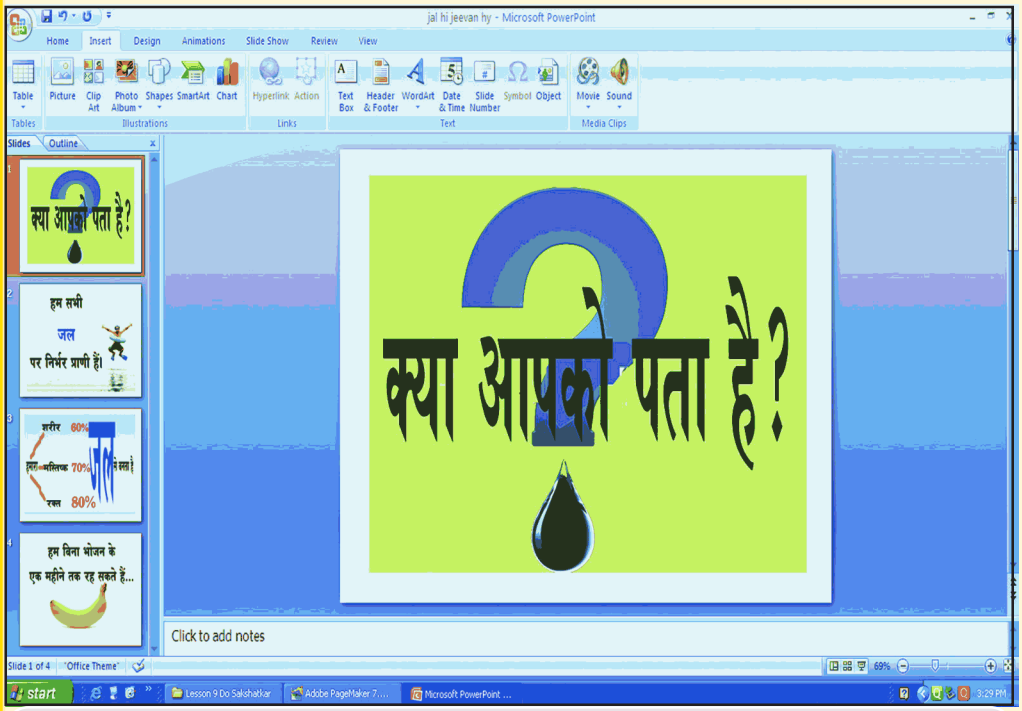

- स्वच्छ जल का उपयोग हम किसके लिए करते हैं?
- यदि जल संकट आता है तो परिस्थिति कैसी होगी?
- जिस तरह जनसंख्या बढ़ रही है उस हिसाब से जल का उपयोग हमें किस तरह करना चाहिए?
- जल संरक्षण के लिए हम क्या-क्या कर सकते हैं?

रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून। पानी गये न उबरै, मोती मानुष चून।। - रहीम

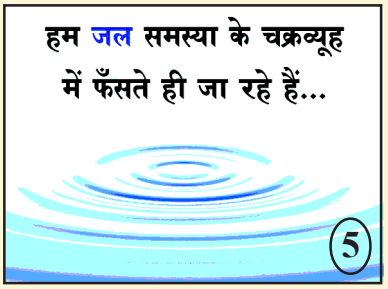

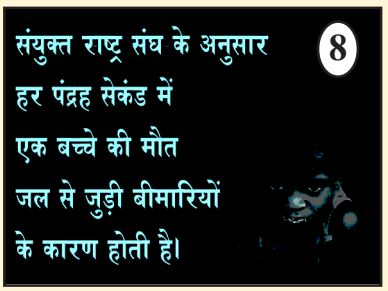

– पी.पी.टी. प्रस्तुतकर्ता जेफ ब्रेनमन